टिप्पणी

2

ध्रुपद

(क)

राग-यमन

ध्रुपद, शास्त्रीय संगीत में एक जोरदार गायकी है, जिसे राग में गाय जाता है। ध्रुपद की प्रकृति भक्ति रस की होता है। ध्रुपद शब्द की उत्पत्ति ध्रुव शब्द से होती है।

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग यमन की बंदिश, उसकी स्वर लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

उद्देश्य

पाठ के अभ्यास के पश्चात् विद्यार्थी:

- शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद विधा को पहचान पायेंगे;
- उल्लेखित ध्रुपद विधा में यमन, भैरव, भूपाली, अल्हैया विलावल एवं काफी रागों का विस्तार में वर्णन कर पायेंगे;
- ध्रुपद विधा में प्रयुक्त राग पहचान पायेंगे;
- ध्रुपद विधा की उल्लेखित राग को प्रस्तुत कर पायेंगे।

राग परिचय

थाट – कल्याण

वादी – गंधार

संवादी - निषाद

जाति - संपूर्ण-संपूर्ण

गायन समय – रात्रि का पहला प्रहर

आरोह – नि़ रे ग म प ध नि सां

अवरोह - सां नि ध प म ग रे सा

पकड़ - नि़ रे ग रे प रे ग रे नि़ रे सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल - चौ ताल (12 मात्रा)

स्थाई

चलो हटो जाओ बनवारी
छांडो बैयां मोरी
ढीट लंगर लाज न
आवत तुम कहाँ
हंसती सखियां सारी

अंतरा

छीनत दधि मग
रोकत, बाट चलत

टिप्पणी

नित टोकत
करकी गई सब
चूड़ियां बिगरि गई
सब सारी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प	नि	ध	नि	म॑	प	ग	प	रे	—	सा	—
च	लो	ह	टो	जा	ओ	ब	न	वा	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा	रे	सा	प	—	प	प	प	नि	ध	प	प
छां	ऽ	डो	बै	ऽ	या	मो	री	ढी	ऽ	ट	लं
x		0		2		0		3		4	
प	प	ग	म॑	प	प	ग	म॑	प	प	रे	रे
ग	र	ला	ऽ	ज	न	आ	ऽ	व	त	तु	म
x		0		2		0		3		4	
सां	सां	नि	ध	प	ग	म॑	प	रे	—	सा	—
क	हाँ	हं	स	ती	स	खि	याँ	सा	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	—	ग	ग	प	प	सां	ध	सां	—	सां	सां
छी	ऽ	न	त	द	धि	म	ग	रो	ऽ	क	त
x		0		2		0		3		4	
सां	रें	गं	रें	सां	सां	नि	ध	नि	ध	प	प
बा	ऽ	ट	च	ल	त	नि	त	टो	ऽ	क	त
x		0		2		0		3		4	
प	नि	ध	नि	प	—	म॑	ग	म॑	ध	प	—
क	र	की	ग	ई	ऽ	स	ब	चू	ड़ि	याँ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

नि	ध	प	प	ग	म॑	प	प	रे	—	सा	—
बि	ग	रि	ग	ई	—	स	ब	सा	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	

स्थायी

दुगुन

x		0		2		0		3		4	
पनि	धनि	म॑प	गप	रे-	सा	सारे	सा प	-प	पप	निध	पप
चलो	हटो	जाओ	बन	वाऽ	रीऽ	छांऽ	डोबै	ऽया	मोरी	ढीऽ	टलं
x		0		2		0		3		4	
पप	गम॑	पप	गम॑	पप	रेरे	संसं	निध	पग	म॑प	रे-	सा-
गर	लाऽ	जन	आऽ	वत	तुम	कहाँ	हंस	तीस	खियाँ	साऽ	रीऽ

तिगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								प नि ध	नि मे प	ग प रे	- सा -
								च लो ह	टो जा ओ	ब न वा	ऽ री ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा रे सा	प - प	प प नि	ध प प	प प ग	म॑ प प	ग म॑ प	प रे रे	सां सां नि	ध प ग	मे प रे	- सा -
छां ऽ डो	बै ऽ या	मो री ढी	ऽ ट लं	ग र ला	ऽ ज न	आ ऽ व	त तुम	क हाँ हं	स ती स	खि याँ सा	ऽ री ऽ
x		0		2		0		3		4	

चौगुन

x		0		2		0		3		4	
पनिधनि	म॑पगप	रे-स-	सारेसाप	-पपप	निधपप	पपगम॑	पपगम॑	पपरेरे	सांसांनिध	पगम॑प	रे-सा-
चलोहटो	जाओबन	वाऽरीऽ	छांऽडोबै	ऽयामोरी	ढींऽटलं	गरलाऽ	जनआऽ	वततुम	कहाँहंस	तीसखियाँ	साऽरीऽ

टिप्पणी

अन्तरा

दुगुन

प-	गग	पप	सांध	सां-	सांसां	सारें	गरें	सांसां	निध	निध	पप
छीऽ	नत	दधि	मग	रोऽ	कत	बाऽ	टच	लत	नित	टोऽ	कत
x		0		2		0		3		4	
पनि	धनि	प-	म॑ग	म॑ध	प-	निध	पप	गम॑	पप	रे-	सा-
कर	किग	ईऽ	सब	चुडि	याँऽ	बिग	रिग	ई-	सब	साऽ	रीऽ
x		0		2		0		3		4	

तिगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								प - ग	ग प प	सां ध सां	- सां भां
								छीऽन	तदधि	मगरो	ऽकत
								3		4	
सारेंगं	रेंसांसां	निधनि	धपप	पनिध	निप-	म॑गम॑	धप-	निधप	पगम॑	पपरे	-सा-
बाऽट	चलत	नितटो	ऽकत	करकि	गईऽ	सबचु	ड़ियाँऽ	बिगरि	गई-	सबसा	ऽरीऽ
x		0		2		0		3		4	

चौगुन

प - ग	पपसांथ	सां-सांसां	सांरेंगंरें	सांसांनिध	निधपप	पनिधनि	पन्म॑ग	म॑धप-	निधपप	गम॑पप	रे-सा-
छंऽनित	दधिमग	रोऽकत	बाऽटच	लतनित	टोडकत	करविग	ईऽसब	चुड़ियाँ	बिगरिग	ई-सब	साऽरीऽ
x		0		2		0		3		4	

पाठगत प्रश्न 2.1

1. ध्रुपद के विषय में संक्षेप में लिखिए।
2. ध्रुपद की प्रकृति के विषय में लिखिए।
3. राग यमन के वादी संवादी कौन-से है?

टिप्पणी

(ख)

राग – भैरव (ध्रुपद)

हमने पिछले पाठ में शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग भैरव की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में सूलताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही सूलताल है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाठ – भैरव

वादी – धैवत

संवादी – ऋषभ

गायन समय – प्रात: काल

जाति – संपूर्ण-संपूर्ण

रागसूचक स्वर – ग, म रे, सा

आरोह – सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां

अवरोह – सां, नि, ध, प म, ग, रे, सा

पकड़ – सा, ग, म, ध, प, ध, प, म, ग, म, रे, सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल-झांप ताल (10 मात्रा)

स्थायी

आदि मध्यांत जोगत जोगी शिव
कनक विष अमियद विषभोगी शिव।

अंतरा

नाभि के कमल ते तीन मूरत भई
भीन जाने सोच नरख भोगी शिव।

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ध॒	–	ध॒	प	ध॒	म	म	प	ग	म
आ	ऽ	दि	म	द	अं	ऽ	त	जो	ऽ
x		0		2		3		0	
रे॒	रे॒	रे॒	ग	प	म	ग	रे॒	सा	सा
ग	ऽ	त	जो	ऽ	गी	ऽ	शि	व	ऽ
x		2		0		3		0	
सा	नि़	सा	ग	म	प	ध॒	नि	सां	रें॒
क	न	क	वि	ष	अ	मि	य	ऽ	द
x		0		2		3		0	
सां	नि	ध॒	पध॒	नि	ध॒	पम	प	मग	म
वि	ष	ऽ	भोऽ	ऽ	गी	ऽऽ	शि	ऽऽ	व
x		0		2		3		0	

अंतरा

म	म	प	ध॒	ध॒	नि	सां	नि	सां	सां
ना	ऽ	भि	के	ऽ	क	म	ल	ते	ऽ
x		0		2		3		0	
ध॒	ध॒	ध॒	नि	सां	रें॒	सांनि	सां	ध॒	प
ती	ऽ	न	मू	ऽ	र	तऽ	भ	ई	ऽ
x		0		2		3		0	
म	म	प	ग	म	प	ध॒	नि	सां	रें॒
भी	ऽ	न	जा	ऽ	ने	ऽ	सो	ऽ	चे
x		0		2		3		0	
सां	नि	ध॒	पध॒	नि	ध॒	पम	प	ग	म
न	र	ख	भोऽ	ऽ	गीऽ	ऽ	शि	ऽ	व
x		0		2		3		0	

टिप्पणी

स्थायी

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ध-	धप	धम	मप	गम	रेरे	रेग	पम	गरे	सासा
आऽ	दिम	दअे	ऽत	जोऽ	गऽ	तजो	ऽगी	ऽशि	वऽ
x		0		2		3		0	

सानि़	साग	मप	धनि	सांरें	सांनि	धपध	निध	पमप	मगम
कन	कवि	षअ	मिय	ऽद	विष	ऽभोऽ	ऽगी	ऽऽशि	ऽऽव
x		0		2		3		0	

इस प्रकार तिगुन एक मात्रा में तीन एवं चौगुन एक मात्रा में चार बोल तथा अंतरे की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.2

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद की बंदिश .... ताल में निबध्द है।
2. राग भैरव का मुख्य स्वर समुदाय .... है।
3. राग भैरव का वादी .... और संवादी स्वर .... है।

(ग)

राग-भूपाली (ध्रुपद)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग भूपाली की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि के साथ दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को देखें।

राग परिचय

थाट - कल्याण

वादी - गंधार

संवादी - धैवत

गायन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

जाति - औड़व-औड़व

आरोह - सा रे ग प, ध सां

अवरोह - सां ध प, ग रे सा

पकड़ - ग, रे, सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा

बंदिश (ध्रुपद)

ताल - चौताल (12 मात्रा)

स्थायी

तू ही सूर्य तू ही चंद्र
तू ही पवन तू ही अगन
तू ही आप तू आकाश
तू ही धरनी यजमान।।

अंतरा

भव रूद्र उग्रसर्व
पशुपति सम-समान

टिप्पणी

ईशान भीम सकल

तेरे ही अष्टनाम।।

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ग	ग	रे	ग	प	प	ग	ग	रे	सा	रे	सा
तू	ऽ	ही	सू	ऽ	र्य	तू	ऽ	ही	चं	ऽ	द्र
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	ध़	सा	ग	रे	प	प	प	ग	ग	ग
तू	ऽ	ही	प	व	न	तू	ऽ	ही	अ	ग	न
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	रे	प	ग	प	सां	सां	ध	सां	सां	सां
तू	ऽ	ही	आ	ऽ	प	तू	ऽ	आ	का	ऽ	श
x		0		2		0		3		4	
सां	गं	रें	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
तू	ऽ	ही	ध	र	नी	य	ज	ऽ	मा	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

प	प	ग	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	रें	सां
भ	व	ऽ	रु	ऽ	द्र	उ	ऽ	ग्र	स	ऽ	र्व
x		0		2		0		3		4	
सां	ध	–	सां	सां	रें	गं	रें	रें	सां	ध	प
प	शु	ऽ	प	ति	ऽ	स	म	ऽ	स	मा	न
x		0		2		0		3		4	
प	ग	रे	ग	प	सांध	सां	सां	सां	सां	रें	सां
ई	ऽ	ऽ	शा	ऽ	नऽ	भी	ऽ	म	स	क	ल
x		0		2		0		3		4	
सां	गं	रें	सां	प	ध	सां	ध	प	ग	रे	सा
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ही	अ	ऽ	ष्ट	ना	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	

टिप्पणी

स्थायी

दुगुन

गग रेग	पप गग	रेसा रे सा	सासा ध़सा	गरे पप	पग गग
तूऽ हीसू	ऽर्य तूऽ	हीच ऽद्र	तूऽ हीप	वन तूऽ	हीअ गन
x	0	2	0	3	4
सासा रेप	गप सांसां	धसां सांसां	सांगं रेंसां	पध सांध	पग रेसा
तूऽ हीआ	ऽप तूऽ	आका ऽश	तूऽ हीध	रनी यज	ऽमा ऽन
x	0	2	0	3	4

इसी प्रकार तिगुन नौंवी मात्रा से आरम्भ होकर एक मात्रा में तीन एवं चौगुन सम से आरम्भ होकर एक मात्रा में चार बोल तथा अंतरे की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.3

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद विधा .... में निबद्ध है।
2. चौताल में .... मात्रा होती है।
3. राग भूपाली की जाति .... है।

टिप्पणी

(घ)

राग-अल्हैया बिलावल (धमार)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग अल्हैया बिलावल की बंदिश, उसकी स्वर लिपि तथा आलाप एवं ताल सीखे। प्रस्तुत पाठ में धमार ताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की धमार शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाट - बिलावल

वादी - धैवत

सम्वादी - गन्धार

जाति - षाड्व - सम्पूर्ण

गायन का समय - प्रातः काल

आरोह - सा रे ग रे ग प ध नि सां

अवरोह - सां नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - म ग म रे, ग प, ध नि सां

धमार (बन्दिश)

ताल-धमार ताल (14 मात्रा)

स्थायी

अनोखे होरी खेलन लागे

अन्तरा

निस ही निस रंग भरत सांवर

कछु सोवत कछु जागे

संचारी

लाल गुलाल लिए कर ललन

नाद नंदन अनुरागे

टिप्पणी

आभोग

कृष्ण जीवन लच्छिराम के प्रभु प्यारे
बने हैं मरगज बागे

स्वरलिपि

स्थायी

													रे
													अ
11	12	13	14	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ग	प	नि	–	सां	सां	सां	सां	ध	ध	निप	म	ग	रे
नो	ऽ	खे	ऽ	हो	ऽ	री	खे	ऽ	ल	नऽ	ला	गे	ऽ
3				x					2		0		

अन्तरा

ग	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	ध	ध	निप	म	ग	ग
नि	स	ही	ऽ	नि	स	रं	ग	भ	र	ऽत	सां	व	र
3				x					2		0		
ग	प	निध	नि	सां	सां	सां	सांनि	सांध	नि	प	म	ग	रे
क	छु	सोऽ	ऽ	व	त	ऽ	कऽ	ऽऽ	ऽ	छु	जा	गे	ऽ
3				x					2		0		

संचारी

ग	रे	ग	प	म	ग	ग	ग	रे	ग	प	म	ग	रेसा
ला	ऽ	ल	गु	ला	ऽ	ल	लि	ये	क	र	ल	ल	ऽन
3				x					2		0		
ग	–	रे	ग	प	प	–	ध	धनि	प	म	म	ग	रे
नं	ऽ	द	नं	द	न	ऽ	अ	नुऽ	ऽ	रा	ऽ	गे	ऽ
3				x					2		0		

आभोग

ग	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां	धनि	प	प–	म	–	ग
कृ	ऽ	ष्	ण	जी	व	न	–	लच्छिरा	ऽ	मके	प्रभु	प्या	रे
3				x					2		0		
ग	प	निध	नि	सां	गं	रें	सां	–	सांध	निप	म	ग	रे
ब	ने	हैऽ	ऽ	म	र	ऽ	ग	ऽ	जऽ	ऽऽ	ना	गे	ऽ
3				x					2		0		

स्थायी एवं अंतरा

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
				रेग	पनि	-सां	सांसां	सांध	धनिप	मग	रेग	पध	निसां
				अनो	ऽखे	ऽहो	ऽरी	खेऽ	लनऽ	लागे	ऽनि	सही	ऽनि
					2		0			3			
सांसां	सांध	धनिप	मग	गम	पनिध	निसां	सांसां	सांनि सांध	निप	मग	रेरे	गप	नि-
सरं	गभ	रऽत	सांव	रक	छुसोऽ	ऽव	तऽ	कऽऽऽ	ऽछु	जागे	ऽअ	नोऽ	खेऽ
x					2		0			3			

इस प्रकार तिगुन में एक मात्रा में तीन और चौगुन में एक मात्रा में चार बोल होंगे तथा संचारी एवं आभोग के दुगुन, तिगुन एवं चौगुन अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 2.4

निम्नलिखित की जोडियाँ बनाइए।

1. थाट - म ग म रे, ग प ध नि सां
2. वादी - सां रे ग रे ग प ध नि सा
3. आरोह - धैवन
4. पपुड - बिलावल

टिप्पणी

(ङ)

राग-काफी (ध्रुपद)

पिछले पाठ में हमने शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली में राग काफी की बंदिश, उसकी स्वर-लिपि तथा आलाप एवं तान सीखे। प्रस्तुत पाठ में चौताल में बद्ध शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद शैली की एक बंदिश दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिए साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

थाट - काफी

वादी - पंचम

संवादी - षड्ज

जाति - संपूर्ण-संपूर्ण

गायन का समय - मध्यरात्रि

आरोह – सा रे, ग, म, प, ध, नि, सां

अवरोह – सां, नि, ध, प म, ग, रे, सा

पकड़ – सा सा, रे रे, ग ग, म म, प

बंदिश (ध्रुपद)

ताल-चौताल (12 मात्रा)

स्थायी

आये री मेरे धाम श्याम
कुंवर कृष्ण उनके चरण
नैनन सौं पर सो

अंतरा

वंशी वट तरवर
वंशी लिए साज नटवर
सजि री औड़ पियरो पट
धाय आई री मेरे

टिप्पणी

स्वरलिपि

स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सा	रे	रे	ग	ग	रे	प	–	ध	ग	–	रे
आ	ऽ	ये	री	मे	रे	धा	ऽ	म	श्या	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	
म	ग	रे	रे	नि	सा	रे	ग	प	ध	नि	सां
कुं	व	र	कृ	ऽ	ष्ण	उ	न	के	च	र	ण
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	म	प	ग	रे	प	ग	रे	रे	नि	सा
नै	ऽ	न	न	सौं	ऽ	प	र	ऽ	सो	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	–	प	ध	नि	सां	सां	सां	रें	नि	सां	रें
वं	ऽ	शी	ऽ	व	ट	त	र	क	र	वं	ऽ
x		0		2		0		3		4	
रें	मं	रें	सं	सां	सां	सां	रें	नि	सां	सां	–
शी	ऽ	लि	ए	सा	ऽ	ज	न	ट	व	ऽ	र
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां	–
स	ऽ	जि	ऽ	री	ऽ	औ	ऽ	रो	पि	य	रो
x		0		2		0		3		4	
नि	ध	म	प	ग	रे	ग	रे	रे	रे	नि	सा
प	ट	धा	ऽ	य	ऽ	आ	ऽ	ई	री	मैं	रे
x		0		2		0		3		4	

स्थायी

दुगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
						सारे	रेग	गरे	प–	धग	–रे
						आऽ	येरी	मेरे	धाऽ	मश्या	ऽम
मग	रेरे	निसा	रेग	पध	निसां	निध	मप	गरे	पग	रेरे	निसा
कुंव	रकृ	ऽष्ण	उन	केच	रण	नैऽ	नन	सौंऽ	पर	ऽसो	ऽऽ

इसी प्रकार तिगुन एक मात्रा में तीन तथा चौगुन एक-मात्रा में चार स्वर लेकर गाये जाते हैं। अंतरे के दुगुन, तिगुन तथा चौगुन भी इसी प्रकार गाये जाते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 2.5

1. राग काफी का वादी स्वर कौन सा है?
2. काफी राग की जाति लिखिए।
3. काफी राग के थाट का नाम लिखिए।

आपने क्या सीखा

1. ध्रुपद एक प्राचीन जोरदार गायकी है।
2. ध्रुपद की प्रकृति भक्ति रस की है।
3. राग यमन, भैरव-भूपाली, अल्हैया बिलावल तथा काफी में स्वरलिपि सहित ध्रुपद की बंदिशें हैं।
4. उल्लिखित रागों का सामान्य परिचय

पाठांत प्रश्न

1. राग यमन में ध्रुपद की बंदिश स्वरलिपि सहित लिखिए।
2. राग भैरव में ध्रुपद की एक बंदिश स्वरलिपि सहित लिखिए।
3. राग भूपाली का आरोह-अवराह, पकड, वादी, सम्वादी, वर्णित स्वर तथा जाति लिखिए।
4. राग अल्हैया बिलावल का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. ध्रुपद, शास्त्रीय संगीत की एक प्राचीन जोरदार विधा है। इसे ध्रुवपद भी कहा जाता है, जिसे राग में गाया जाता है।
2. इसकी प्रकृति भक्ति की है।
3. वाही-ग, संवादी-नि

2.2

1. चौताल 2. ग म रे सा 3. वाही-ध संवाही-रे

2.3

1. चौताल 2. 12 मात्रा 3. औडव-औडव

2.4

1. थाट - बिलावल 2. वाही-धैवत
3. आरोह-सारेगरे, गपधनिया 4. पकड़-मगमरे, गप, धनिसां

2.5

1. पंचम 2. संपूर्ण-संपूर्ण 3. काफी